नालन्दा

रिपोर्ट

मकतब-मदरसों में मेयारी तालीम : एक जरूरत

Uniformity in Primary Level Curriculum in Madarsa Education

(जिला स्तरीय सेमिनार)

30 जनवरी 2010, स्थान : सीतापुर

Uniformity in Primary Level Curriculum in Madarsa Education
'मकतब–मदरसों में मेयारी तालीम : एक जरूरत'

(जिला स्तरीय सेमिनार)

30 जनवरी 2010
स्थान : सीतापुर

रिपोर्ट

नालंदा

B-1/84, सेक्टर – B, अलीगंज, लखनऊ – 226 024
Tel. : 0522-2329751, 4028035
Email : nalanda_lko@rediffmail.com

सेमिनार रिपोर्ट
दिनांक : 30 जनवरी 2010

मकतब–मदरसों में मेयारी तालीम : एक जरूरत

'मुस्लिम समुदाय में अपने मजहब को जानना सभी के लिए जरूरी माना गया है। मजहब या दीन को जानने के लिए तालीम को मुख्य जरिया माना गया है। इसी उद्देष्य को लेकर मुस्लिम समुदाय में षिक्षा की अवधारणा का विकास हुआ। बच्चों को दीनी तालीम देने की गरज से मकतब–मदरसे कायम किये गये। वक्त के बदलाव के साथ मदरसों में बच्चों को दीनी तालीम के साथ प्राथमिक स्तर पर हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान एवं सामाजिक विषय आदि की षिक्षा दी जाने लगी है।

अरबी फारसी मदरसा बोर्ड, उत्तर प्रदेष के अनुसार प्रदेष में लगभग 7000 मदरसे हैं। इनमें से लगभग 1300 मान्यता प्राप्त मदरसे हैं। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेष सरकार द्वारा केवल 360 मदरसों को ही अनुदान दिया जा रहा है। बाकी मदरसे समुदाय द्वारा संचालित किये जा रहे हैं। 6–14 वर्ष के सभी बच्चों को षिक्षा उपलब्ध कराने हेतु सर्व षिक्षा अभियान के तहत 'मदरसा आधुनिकीकरण कार्यक्रम' के जरिये सरकार द्वारा मदरसों के बच्चों को आधुनिक षिक्षा की परिधि में लाने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार एक केन्द्रीय मदरसा बोर्ड बनाने पर भी विचार कर रही है।

मदरसों और उनमें पढ़ने वाले बच्चों की तादाद को देखते हुए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास नाकाफी हैं। मुस्लिम समुदाय के बहुत से बच्चों की इब्तिदाई तालीम की शुरुआत मकतब–मदरसा से ही होती है। वर्तमान समय में अधिकांष मदरसों में दीनी तालीम के साथ ही बच्चों को गैर दीनी विषय (हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, आदि) भी पढ़ाये जाते हैं। इन गैर दीनी विषयों को भी मुदर्रिस दीनी विषयों की तरह ही पढ़ाते हैं जिससे बच्चों को गुणात्मक षिक्षा नहीं मिल पाती है साथ ही इन विषयों पर तवज्जो कम होती है। गैर दीनी विषयों के पढ़ाने में षिक्षक पूरी तरह कुषल नहीं हैं और आम तौर पर पढ़ाने वाले अधिकांष षिक्षक अप्रषिक्षित भी हैं।'

प्रदेष में मकतब–मदरसों की स्थिति तथा उनमें गुणवत्तापूर्ण षिक्षा की आवष्यकता को रेखांकित करने वाली ये बातें 'नालन्दा, लखनऊ' द्वारा प्रस्तुत आधार वक्तव्य में शामिल हैं। नालन्दा एक गैर–सरकारी संस्था है। इसका प्रमुख कार्य प्रारम्भिक षिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही सरकारी व गैर–सरकारी संस्थाओं को तकनीकी रूप से मदद करना है। अपनी शुरुआत से ही नालन्दा उत्तर प्रदेष में संचालित विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों से सक्रिय रूप से जुड़ा रहा है। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत काम करते हुए नालन्दा ने विभिन्न प्रकार की षिक्षण सामग्री का विकास किया है। षिक्षक प्रषिक्षण, पाठ्य सामग्री निर्माण, मदरसों में शैक्षिक सुधार, अनुश्रवण एवं शोध–अध्ययन नालन्दा के नियमित क्रिया कलाप हैं। संस्था पिछले कई सालों से 'प्रारम्भ' पत्रिका का प्रकाषन भी कर रही है। मकतब–मदरसा में भी षिक्षा को बेहतर बनाने के काम में लगा नालन्दा का उद्देष्य मकतब–मदरसों में गुणात्मक षिक्षा देने के लिए मुदर्रिसों का प्रषिक्षण तथा मदरसों को तकनीकी मदद देना है। आज जरूरत महसूस की जा रही है कि मदरसे के बच्चों को भी गुणवत्तापरक षिक्षा मिले क्योंकि मदरसों से पढ़कर निकले बच्चे अपनी आगे की तालीम जारी रखते हुए अपना मुस्तकबिल रोषन कर सकें। प्रतियोगिता के इस दौर में मदरसों के बच्चे भी आला मुकाम हासिल कर अच्छे शहरी होने के साथ अपनी जिन्दगी बेहतर बना सकें।

इन्हीं मुद्दों पर गौर करने के लिए नालन्दा ने इस विषय पर कई राष्ट्रीय व क्षेत्रीय सेमिनारों का आयोजन किया है। इसी श्रंखला में दिनांक 30 जनवरी, 2010 को सीतापुर के सोपान होटल में नालन्दा, लखनऊ द्वारा सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट (एसडीटीटी), मुंबई के सहयोग से 'मकतब मदरसा में मेयारी तालीम–एक जरूरत' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। तिलावते कुरान पाक व कई नातें पेष करने के बाद शुरू हुए सेमिनार में सबसे पहले प्रतिभागियों ने एक दूसरे का परिचय प्राप्त किया। इस सेमिनार में विषिष्ट अतिथियों के अलावा सीतापुर तथा उससे सटे बाराबंकी जिले के लगभग 80 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इनमें मदरसों के मुदर्रिस, हेड मुदर्रिस, मदरसा कमेटी के जिम्मेदारान, इंतजामिया कमेटी के लोग तथा नालन्दा मदरसा कार्यक्रम से जुड़े अधिकारी, कार्यकर्ता व संदर्भ व्यक्ति शामिल थे। नालन्दा के कार्यकारी निदेषक श्री प्रभात झा के स्वास्थ्य कारणों से उपस्थित न हो पाने की वजह से नालंदा में मदरसा कार्यक्रम के समन्वयक एवं टीम लीडर मो. आसिम सिद्दीकी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा सेमिनार के विषय व उद्देष्य का परिचय दिया। उप–समन्वयक मो. हिदायतुल्ला ने नालंदा मदरसा कार्यक्रम के बारे में बताया। इसके बाद श्री आसिम सिद्धीकी ने 'षिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009' की रोषनी में गुणवत्तापरक षिक्षा पर अपनी बात रखी। चायपान के बाद सेमिनार के विषिष्ट अतिथि बाराबंकी में मदरसा दारुल उलूम, बाराबंकी के प्रधानाचार्य मौलाना अब्दुल रज्जाक नदवी ने 'मदरसों में मौजूदा इब्तिदायी तालीम और इस्लाह की जरूरत' विषय पर अपना आलेख पढ़ा। इसके बाद लहरपुर, सीतापुर में मदरसा अनवारुल कुरान के प्रधानाचार्य मो. जईम फारूकी ने 'मेयारी तालीम और मदरसा' विषय पर अपना पर्चा पढ़ा। लखनऊ से पधारे उर्दू–हिन्दी साहित्यकार व सामाजिक कार्यकर्ता श्री शकील सिद्धीकी ने 'मौजूदा मदरसा निसाब में मेयारी तालीम की जगह' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रत्येक प्रस्तुति के बाद प्रतिभागियों ने अपनी टिप्पणी व सवाल सामने रखे जिनका जवाब पर्चा पेष करने वाले खास मेहमानों तथा नालन्दा की ओर से दिया गया। सारे आलेख प्रस्तुत किये जाने और भोजन के बाद खुली चर्चा का आयोजन किया गया जिसमें सेमिनार के विषय के साथ–साथ जमीनी सतह पर उठ रहे अनेक दूसरे मुद्दे भी सामने आये।

गौरतलब है कि मौजूदा व इसके पहले की केन्द्र सरकार ने अल्पसंख्यक, खासकर मुस्लिम समुदाय की तरक्की में मदरसा षिक्षा आधुनिकीकरण को खासा महत्व दिया है। सरकार द्वारा स्वीकार की गई सच्चर समिति की सिफारिषों तथा प्रधानमंत्री के अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए लागू किये जा रहे 15 सूत्री कार्यक्रम में मदरसा षिक्षा को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया है। हाल ही में पेष रंगनाथ मिश्र आयोग की रिपोर्ट में भी मदरसा षिक्षा को बेहतर बनाने के लिए अधिक संसाधन आबंटित करने की सिफारिष की गई है। इस पृष्ठभूमि में नालन्दा द्वारा आयोजित सेमिनार का महत्व बहुत बढ़ गया और प्रतिभागियों को इसका बखूबी अहसास भी था।

नालन्दा का काम

प्रतिभागियों तथा विषिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए नालन्दा में मदरसा षिक्षा के समन्वयक, एवं टीम लीडर मो. आसिम सिद्दीकी ने बताया कि नालन्दा पिछले 11 साल से प्राथमिक षिक्षा में गुणवत्तापूर्ण षिक्षा को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा है। उसका उद्देष्य है कि आज के बच्चे कल देष के अच्छे नागरिक बनें तथा अपने समुदाय के साथ देष के विकास में अग्रणी योगदान दें। बच्चों को गुणवत्तापूर्ण षिक्षा दिलाने के लिए संस्था षिक्षकों के प्रषिक्षण तथा पाठ्य सामग्री के निर्माण पर जोर देता है। इस काम में वह दूसरे एनजीओ के अनुभवों से सबक लेता और उनसे विचार–विमर्ष करता रहता है। नालन्दा मकतब–मदरसों व अनौपचारिक षिक्षा में पढ़ने वाले समाज के सबसे गरीब बच्चों पर खासतौर से ध्यान देता है। सरकारी स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण षिक्षा तथा षिक्षा प्रसार के अन्य कामों में नालन्दा प्रदेष सरकार से भी सहयोग करता है। नालन्दा एक षैक्षिक संदर्भ केन्द्र के रूप में उत्तर प्रदेष व झारखंड में काम कर रहा

है। नालंदा बालिका षिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूली पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाले बच्चों (ड्रापआउट) को षिक्षा की मुख्यधारा में लाने के लिए महत्वपूर्ण काम कर रहा है। नालन्दा मकतब–मदरसों में एक्षन रिसर्च का काम कर रहा है ताकि उनकी दिक्कतों का पता चल सके और पक्के तौर से निर्धारित किया जा सके कि उनको गुणवत्तापूर्ण षिक्षा की कहां और कितनी जरूरत है। नालन्दा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनारों में उपस्थित प्रमुख षिक्षा शास्त्रियों ने इस दिषा में महत्वपूर्ण दिषा संकेतक का काम किया है। संस्था प्रदेष के बाराबंकी, सीतापुर व बहराइच में स्थित 350 मदरसों के साथ मिल कर काम कर रहा है। श्री सिद्दीकी ने प्रतिभागियों को बताया कि इस सेमिनार की जरूरत मकतब–मदरसों में गुणवत्तापूर्ण षिक्षा को बढ़ावा देने के मकसद से संबंधित लोगों के बीच बहस–मुहाबसे के लिए की गई है ताकि मकतब–मदरसों की मौजूदा स्थिति में गुणवत्तापूर्ण षिक्षा की वास्तविक आवष्यकता का पता लग सके और इसे हासिल करने के तरीके तय किये जा सकें।

मदरसा शिक्षा में योगदान

नालन्दा में मदरसा षिक्षा कार्यक्रम के उप–समन्वयक मो. हिदायतुल्ला ने प्रतिभागियों को मकतब–मदरसा षिक्षा के क्षेत्र में नालन्दा के काम करने के तरीकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि किसी नई जगह पर काम शुरू करने से पहले वे मदरसों की प्रोफाइल तैयार करते हैं जिससे उनकी संख्या व उनमें छात्रों की संख्या का पता चल सके। उसके बाद षिक्षकों को 4 दिन का उन्मुखीकरण प्रषिक्षण दिया जाता है। प्रषिक्षण के लिए मदरसों के क्लस्टर बनाये जाते हैं तभी उनको प्रषिक्षण दिया जाता है। संस्था, प्रषिक्षण व षिक्षण–प्रषिक्षण सामग्री के बारे में षिक्षकों से फीडबैक भी प्राप्त करता है ताकि इनको और बेहतर बनाया जा सके। मकतब–मदरसा षिक्षा में व्यापक व शीघ्र सुधार के लिए समुदाय का पूरा सहयोग लेने हेतु नालन्दा संदर्भ व्यक्ति तैयार करता है। इनको विषेष प्रषिक्षण दिया जाता है। नालन्दा अब तक संदर्भ व्यक्तियों के तीन प्रषिक्षण आयोजित कर चुका है। मदरसों के बच्चों की षैक्षिक क्षमता व समझ बनाने के लिए नालन्दा बच्चों की वार्षिक कार्यषाला आयोजित करता है। अब तक 500 बच्चों की कार्यषाला आयोजित की जा चुकी हैं। नालन्दा ने मदरसों की जरूरतें जानने के लिए व्यापक और गहन अध्ययन किया है तथा वर्तमान समय में वह विभिन्न मदरसा पाठ्यक्रमों का विषेष अध्ययन कर रहा है। संस्था के लोग मदरसा कार्यक्रम से जुड़े संदर्भ व्यक्ति एवं षिक्षक मदरसा षिक्षा में दूसरे प्रदेषों और दूसरे एनजीओ द्वारा किये जा रहे काम देखने के लिए समय–समय पर यात्रायें भी करते रहते हैं। इन यात्रा कार्यक्रमों के अंतर्गत वे कोलकाता और राजस्थान जा चुके हैं। इसके साथ ही दूसरे प्रदेषों के संस्थाओं के समूह भी नालंदा के मदरसों का अध्ययन करने यहां आ चुके हैं। नालन्दा, मदरसों का चुनाव कर उनको माडल मदरसा बनाने का काम कर रहा है। इन माडल मदरसों में संस्था लगातार काम करती और देखती है कि पाठों की पाठ–योजना (लेसन प्लान) कैसे बनाई और लागू की जाती है। अब तक नालन्दा के कार्य क्षेत्र वाले तीन जिलों में 20 माडल मदरसे विकसित किये जा रहे हैं। 324 मदरसों में प्रषिक्षण दिया जा रहा है। प्रषिक्षण में 3 जिलों में 19 ब्लाकों के 1367 षिक्षक शामिल हुए। इनके 33 क्लस्टर बनाये गये। संस्था ने मदरसा षिक्षकों को प्रषिक्षण देने के लिए माड्यूल विकसित किये हैं, जिनमें आगाज, तष्कील, इस्लाह, हमकदम और परवाज प्रमुख हैं। संदर्भ व्यक्तियों के प्रषिक्षण के लिए माड्यूल हमकदम बनाया गया है। मदरसे में चलने वाली किताबों में सुधार की दिषा में नालन्दा ने महत्वपूर्ण काम करते हुए स्वयं 'अपनी किताब' श्रृंखला बनाई हैं। मदरसों में पढ़ने वाले बच्चों की कार्यषालाओं में बच्चों ने 30 बाल पत्रिकाओं का निर्माण किया है। नालन्दा के प्रयासों से मदरसों के लगभग 61686 बच्चों को लाभ हुआ है।

शिक्षा अधिकार कानून

भारत सरकार के जन–कल्याणकारी कार्यों में 6–14 साल के सभी बच्चों को मुफ्त व अनिवार्य षिक्षा देने के उद्देष्य से लाये गये षिक्षा अधिकार कानून का अत्यधिक महत्व है। इससे जमीनी

स्तर पर भारी बदलावों की उम्मीद है। श्री आसिम सिद्दीकी ने प्रतिभागियों का इस कानून की खास–खास बातों से परिचय कराया। संविधान के 86वें संषोधन द्वारा 2002 में षिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया और सरकार ने वर्तमान कानून में इसे लागू करने के लिए बनाया है। अगस्त 2009 में इसे कानून का रूप दिया गया। इस एक्ट के अनुसार निर्धारित व्यवस्था को सभी स्कूलों में पांच साल के भीतर लागू करना होगा। जो स्कूल इसे लागू नहीं कर सकेंगे वे समाप्त कर दिये जायेंगे। षिक्षा अधिकार कानून लागू होने के बाद बिना मान्यता वाला कोई स्कूल नहीं चल सकेगा। इस अधिनियम की खासियत, सभी बच्चों को पड़ोस के स्कूल में भर्ती कराने की जिम्मेदारी बच्चों के माता–पिता व संरक्षकों पर भी डालना है। निजी स्कूलों को 25 प्रतिषत गरीब बच्चों को अनिवार्य रूप से दाखिला देना होगा जिनकी फीस सरकार अदा करेगी। स्कूलों में छात्रों की संख्या के हिसाब से कमरों व अन्य सुविधायें तथा षिक्षकों की संख्या का प्राविधान भी अधिनियम में किया गया है। अधिनियम में बच्चों के हित को सर्वोपरि रखते हुये पढ़ने–पढ़ाने के तरीकों तथा अन्य बातों पर भी ध्यान दिया गया है। किसी बच्चे को स्कूल से निकाला नहीं जा सकता है व किसी बच्चे को मानसिक–षारीरिक यातना नहीं दी जा सकती है। गुणवत्तापूर्ण षिक्षा के लिए लगातार मूल्यांकन, परीक्षाओं में नंबरों के बजाय ग्रेड की व्यवस्था तथा षिक्षा का माध्यम मातृभाषा में होना भी कानून के प्राविधानों में शामिल है। राज्य सरकार प्रदेष की स्थितियों को देखते हुए इसमें और सुधार की कोषिषें कर रही है।

श्री आसिम सिद्दीकी के प्रस्तुतीकरण के बाद प्रतिभागियों ने अनेक सवाल पूछे व अपनी परेषानियां बताईं जिनका श्री सिद्दीकी व दूसरे विषिष्ट अतिथियों ने समुचित जवाब दिया। एक प्रतिभागी ने कहा कि अल्पसंख्यक संस्थान होने के नाते मकतब–मदरसे, षिक्षा अधिकार कानून के दायरे में नहीं आते हैं पर उनका समुचित पंजीकरण होना चाहिये। एक मदरसे के मुदर्रिस मो. शफीक ने कहा कि अल्पसंख्यक संस्थानों की पंजीकरण फीस बढ़ गई है जिससे मान्यता मिलने में दिक्कत आती है। श्री सिद्दीकी ने स्वीकार किया कि मदरसों को मान्यता मिलने में दिक्कत हो रही है और इस काम में लगे सरकारी तंत्र की ठिलायी हो सकती है, पर नालन्दा मुदर्रिसों और मदरसा इंतजामिया की बातें ऊपर पहुंचाने की अपनी कोषिषें जारी रखेगा। उन्होंने यह भी बताया कि यह समस्या उत्तर प्रदेष में सबसे ज्यादा नजर आती है, जबकि अरबी–फारसी मदरसा बोर्ड से जुड़े दूसरे प्रदेषों के मदरसा बोर्ड अच्छा काम कर रहे हैं। हम लोग प्रदेष मदरसा बोर्ड के अधिकारियों को अपने बीच में लाने व मदरसा इंतजामिया तथा मुदर्रिसों से उनकी दिक्कतें आमने–सामने बताने का प्रयास कर रहे हैं। यह काम प्रदेष में मदरसा षिक्षा को आधुनिक बनाने के काम को गति देने के लिए बहुत जरूरी है। एक प्रतिभागी ने पूछा कि आपकी तंजीम मदरसों को मान्यता दिलाने में क्या मदद कर सकती है? इस पर मो. आसिम सिद्दीकी ने कहा कि नालन्दा का मुख्य काम पढ़ाई में सुधार करना है। फिर भी हम आपकी दिक्कतें समझते हैं और इनको हल करने में आपके साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने की कोषिष कर रहे हैं।

इस्लाह की जरूरत

मदरसा दारुल उलूम, बाराबंकी के प्रधानाचार्य मौलाना अब्दुल रज्जाक नदवी ने 'मदरसों में मौजूदा इब्तिदायी तालीम और इस्लाह की जरूरत' विषय पर अपना पर्चा पढ़ा। नदवी साहब बहुत लंबे समय से मदरसा षिक्षा तथा मुस्लिम समुदाय की तालीमी व मुआसरी तरक्की के कामों में लगे हुए हैं और उनकी गिनती जिले की सम्मानित सख्शियतों में होती है। बाराबंकी के पीरबटावन मुहल्ले में स्थित उनका मदरसा 1936 से चल रहा है। मौलाना नदवी ने अपने पर्चे की शुरुआत में प्रतिभागियों को याद दिलाया कि पैगंबर हजरत मुहम्मद (स.अ.) ने फरमाया है कि पैदा होने से लेकर कब्र में जाने तक इल्म हासिल करो। इल्म का पैमाना बहुत विस्तृत है और कोई भी सख्श अपने बारे में यह नहीं कह सकता है कि उसे सब कुछ मालूम है। तालीम हासिल करना हर मुस्लिम मर्द–औरत का फर्ज है। हम सभी तालीम की अहमियत जानते हैं। एक जमाने में मदरसे बहुत अहम मरकज होते थे और हर कोई उनमें पढ़ना गर्व का विषय

मानता था, पर आज उनकी हालत ठीक नहीं है। आज कोई भी अपने बच्चों को मदरसों में नहीं भेजना चाहता है। हमें इस बदहाली पर गौर करना चाहिये। क्या वजह है कि मदरसों की तालीमी हालत में गिरावट आ गई है? इस पर मदरसे से जुड़े हर सख्श को सोचना चाहिये, चाहे वह मुदर्रिस हो, मदरसा इंतजामिया का हिस्सा हो या मुस्लिम कौम की बेहतरी के काम करने वाला कोई और व्यक्ति। हमें नालन्दा का शुक्रिया अदा करना चाहिये कि वह हमारा इतना जरूरी काम कर रहा है। हमें उसके प्रयासों में भरपूर योगदान देना चाहिये। नदवी साहब का यह भी मानना था कि दीनी और दुनियावी तालीम के बीच लाइन खींचने की वजह से मदरसों में षिक्षा की गुणवत्ता बिगड़ी है। आज केवल दीनी तालीम देने वाले मदरसों की हालत सुधारने पर भी गौर करना जरूरी है। सभी मदरसों के के पास मेयारी तालीम देने के लिए बेहतरीन संसाधन होने चाहिये। समाज की एक सच्चाई यह भी है कि गरीब माता–पिता अपने बच्चों को चंद पैसों के लालच में तालीम से अलग कर किसी काम पर लगा देते हैं। मदरसों–मकतबों में प्रषिक्षित षिक्षकों की कमी है। नालन्दा की वजह से कुछ मुदर्रिस प्रषिक्षित हो रहे हैं, इन कोषिषों को और ज्यादा बढ़ाने की फौरी जरूरत है। मौलाना नदवी ने पुरजोर पैरवी की कि एक एक ऐसा निसाब बनाया जाये जिससे सभी मदरसों में जदीद तालीम को बेहतर बनाया जा सके। बड़े मदरसों में ऐसा काम हो रहा है और अब उनमें कंप्यूटर व अंग्रेजी पढ़ाई लाजमी कर दी गई है।

नदवी साहब के पर्चा पेष करने के बाद प्रतिभागियों ने अपने ख्यालात और सवालात सामने रखे। एक प्रतिभागी ने कहा कि हाल ही में दारुलउलूम देवबंद ने अपने पाठ्यक्रम का विस्तार करने तथा कानूनों से जुड़ी जानकारी भी तलबा को देने की बात की है। इसका स्वागत किया जाना चाहिये। एक प्रतिभागी के सवाल के जवाब में मौलाना नदवी ने कहा कि मदरसा तालीम का मकसद अच्छा मुसलमान, अच्छा शहरी और अच्छा समाज बनाना होना चाहिये। अंजुमन तालीमे दीन में जदीद तालीम भी शामिल है। उत्तर प्रदेष की हालत का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मदरसों में एक निसाब लागू करने का शासनादेष हुआ है, पर इसके अनुसार किताबें ही नहीं हैं। इस आदेष को कई साल बीत गये हैं पर अभी तक कुछ खास नहीं हुआ है। हमें अपने भीतर झांक कर देखना होगा। हमारे भीतर से फिक्र और अमल निकल गया है और इसीलिये बदहाली फैली है। हमें अपनी आलोचना खुद करनी होगी। अगर सभी लोग कोषिष करें तो मदरसों की पुरानी बेहतरीन हालत फिर वापस आ सकती है। मो. आसिम सिद्दीकी ने बताया कि कुछ समय पहले नालन्दा ने मदरसों के बच्चों की प्रतियोगिता करवाई थी जिसमें मौलाना अब्दुल रज्जाक नदवी के मदरसे की लड़कियों को सबसे ज्यादा इनाम मिले थे। उन्होंने उम्मीद जताई कि सीतापुर जिले से भी ऐसे बेहतरीन मदरसे बनाने के लिए आलिम व मुदर्रिस सामने आयेंगे। मदरसों की मान्यता पर एक प्रतिभागी को जवाब देते हुए मौलाना नदवी ने विस्तार से बताया कि मदरसों को मान्यता दो जगह से मिलती है, अल्पसंख्यक विभाग से और षिक्षा विभाग से। अल्पसंख्यक विभाग के कानून ज्यादा सख्त हैं क्योंकि इसके अंतर्गत पंजीकरण करवाने के लिए 8000 रुपये का फिक्स डिपाजिट देना होता है। यहां भ्रष्टाचार भी बहुत है। षिक्षा विभाग का कामकाज इससे थोड़ा बेहतर है। मौलाना नदवी ने कहा कि हमें मान्यता के बारे में आने वाली दिक्कतों और भ्रष्टाचार के खिलाफ अपनी षिकायतें दर्ज करानी चाहिये और इस काम को अभियान की तरह लेना चाहिये। देर–सवेर हालत में सुधार जरूर होगा। श्री शकील सिद्दीकी का कहना था कि दीनी तालीमी कौंसिल से मदरसे की मान्यता लेनी बहुत आसान है और सरकार भी इसे स्वीकार करती है। एक प्रतिभागी की षिकायत थी कि वजीफों और खाने के लिए पैसों की व्यवस्था होने के बाद हालत सुधरने के बजाय और बिगड़ी है। केन्द्र सरकार से मिलने वाले वजीफे का भी यही अंजाम हुआ है। कई लोग पैसों के लालच में मदरसा खोल तो लेते हैं, पर वहां अच्छी पढ़ाई की फिक्र नहीं करते हैं। लगभग सभी प्रतिभागियों और विषिष्ट अतिथियों का मानना था कि तमाम दिक्कतों के बावजूद मदरसे की सोसायटी का रजिस्ट्रेषन और मदरसे की मान्यता जरूरी है।

मेयारी तालीम की जरूरत

लहरपुर, सीतापुर में मदरसा अनवारुल कुरान के प्रधानाचार्य मो. जईम फारूकी ने 'मेयारी तालीम और मदरसा' विषय पर अपना आलेख पढ़ा। फारूकी साहब का सीतापुर में मदरसा षिक्षा में अहम मुकाम है। उन्होंने जिले में मदरसा षिक्षा को बेहतर बनाने में नालन्दा का लगातार सहयोग किया है और सहयोग लिया है। मो. जईम फारूकी ने साफ कहा कि आगे आने वाली नस्लों में दीन फैलाने के लिए भी तालीम की जरूरत है। सभी बच्चों को षिक्षाषास्त्र के अनुसार जरूरी बुनियादी तालीम मिलनी चाहिये। षिक्षाषास्त्रियों ने विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए बेहतरीन तकनीकें विकसित की हैं, पर दिक्कत यह है कि दुनियावी तालीम भी दीनी तालीम की तरह दी जा रही है। षिक्षकों को इन विषयों को पढ़ाने की योग्यता नहीं है अतः ऐसी हालत में गुणवत्ता की बात करना मुष्किल है। नालन्दा के प्रषिक्षण से बदलाव संभव है पर इसके लिये षिक्षकों में जोष होना जरूरी है। कई बार षिक्षक प्रषिक्षण लेने के बाद भी सीखी गई तकनीकें लागू नहीं करते हैं। उन्होंने बताया कि लहरपुर में 30–35 मदरसे हैं जिसमें 10–12 ही मान्यता प्राप्त हैं। गैर–मान्यता वाले मदरसों की तालीम बेहतर है। यहां के सबसे पुराने मदरसे में तालीम की हालत एकदम चौपट है। यहां 12–14 साल के बच्चे अपना नाम भी नहीं लिख पाते हैं। इस सूरतेहाल में बदलाव के लिए बहुत काम करने की जरूरत है। फारूकी साहब ने लगातार प्रषिक्षण की आवष्यकता पर जोर दिया। उनका कहना था कि दो प्रषिक्षणों के बीच ज्यादा समय बीत जाने पर प्रषिक्षण का असर समाप्त हो जाता है।

मो. जईम फारूकी के पर्चे पर अपनी बात रखते हुए नालन्दा में मदरसा षिक्षा के समन्वयक मो. आसिम सिद्दीकी ने कहा कि संस्था में कर्मचारियों की कमी है जिसके कारण हम बहुत ज्यादा काम नहीं कर पाते हैं। कई सर्वेक्षणों से यह बात सामने आई है कि प्रदेष में दर्जा 4 के 70 फीसदी बच्चों को ठीक से पढ़ना नहीं आता तथा लिखने की हालत और बुरी है। नालन्दा बच्चों की स्थिति समझने और उसमें सुधार की हर संभव कोषिष करती है। षिक्षा की गुणवत्ता मापने पर एक प्रतिभागी के सवाल के जवाब में मो. आसिम ने कहा कि षिक्षा और मदरसे की गुणवत्ता बच्चे के चेहरे पर दिखाई देती है। जहां बच्चे का चेहरा खुष व खिला हुआ हो, उसे लोगों से मिलने–जुलने और बात करने में संकोच न हो, उसे पाठ का मजमून अच्छी तरह समझ में आये, बच्चे पर पाठ का असर हो तथा वह उसके जेहन में उतर जाये; वहां षिक्षा को गुणवत्तापूर्ण कहा जा सकता है। सफाई भी षिक्षा की गुणवत्ता में शामिल है। मदरसा षिक्षा से लंबे समय से जुड़े एक प्रतिभागी ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि मुदर्रिसों को प्रषिक्षण की बहुत सख्त जरूरत है। इसी के साथ ही उनको अपनी पाठ योजना (लेसन प्लान) पर महारत हासिल होनी चाहिये। विषिष्ट अतिथि शकील सिद्दीकी ने कहा कि प्रषिक्षण की जरूरत लगातार बनी रहती है क्योंकि विभिन्न विषयों से बहुत सी चीजें बेकार होकर हटती तथा बहुत सी महत्वपूर्ण चीजें जुड़ती रहती हैं। भावनात्मक और विषय से लगातार जुड़ाव भी प्रषिक्षण का एक हिस्सा है। प्रषिक्षण का समुचित कार्यक्रम बनाना जरूरी है। अगर अपने विषय के बारे में आप लगातार जानकारी बढ़ाते रहते हैं तो ऐसी पढ़ाई का कोई विकल्प नहीं है। मौलाना रज्जाक नदवी ने मुदर्रिसों और मदरसा इंतजामिया के लोगों को सलाह दी कि वे आसपास के लोगों से सीखें तथा मदरसे का कामकाज बेहतर करने में उनकी मदद लें। उन्होंने कहा कि अगर हम लोगों को मदरसे के मकसद से अच्छी तरह वाकिफ करा सकें तो मदरसे में मुफ्त पढ़ाने के लिए तालीमयाफ्ता लोगों की कमी नहीं होगी।

निसाब और मेयारी तालीम

उर्दू–हिन्दी साहित्यकार व सामाजिक कार्यकर्ता श्री शकील सिद्दीकी ने 'मौजूदा मदरसा निसाब में मेयारी तालीम की जगह' विषय पर अपना पर्चा पेष किया। शकील सिद्दीकी की उर्दू और हिन्दी में लिखी कहानियां और लेख मुस्लिम समुदाय का एक मुकम्मल खाका सामने रखते हैं। उन्होंने मदरसों में चलने वाली पाठ्य पुस्तकों का एक विषेष अध्ययन किया था जिसे राष्ट्रीय

स्तर की एक पत्रिका ने पूरा–पूरा प्रकाषित भी किया था। नालन्दा के मदरसा षिक्षा कार्यक्रम से उनका काफी समय से जुड़ाव है। उनका मानना था कि निसाब के मामले में बच्चे की सलाहियत निखारने के आधार पर फैसला किया जाना चाहिये। मदरसों में निसाब बनाने का इतिहास लंबा है, पर मौजूदा सच यह है कि मदरसों का कोई एक केन्द्रीय पाठ्यक्रम नहीं है। एक ही जिलों के मदरसों में अलग–अलग पाठ्यक्रम है। यकसानियत न होने के बावजूद हर निसाब की अपनी खूबियां व खामियां हैं और हर निसाब के हिसाब से बच्चों ने अपनी सलाहियतों को अपने तालीमी मकसद के हिसाब से संवारा और निखारा भी है। पूरे उप–महाद्वीप और दुनिया भर में परंपरागत निसाब ने बड़े–बड़े आलिम, फाजिल, उस्ताद और समाजी रहनुमा पैदा किये हैं, पर आज के दौर में यह काम इलाकाई, मुल्की और पूरी दुनिया की भाषा सीखे बिना संभव नहीं है। मौजूदा दौर में निसाब में यकसानियत न होने की वजह से बच्चों को दूसरे मदरसों में दाखिला लेने में दिक्कत होती है।

पूरी दुनिया के एक गांव में बदलने का जिक्र करते हुए श्री सिद्दीकी ने कहा कि आज हमें थोड़ा हिसाब, थोड़ा जुगराफिया और दुनिया में हो रही तरक्की व तब्दीली की जानकारी जरूरी हो गई है। मदरसों में जाने वाले ज्यादातर बच्चे बहुत गरीब परिवारों से हैं या घर के करीब किसी सरकारी या जदीद तालीम का मरकज न होने की वजह से वे यहां आते हैं। अफ्सोस की बात है कि ये बच्चे आई.ए.एस, पी.सी.एस, कंपनी मैनेजर या बड़ा बिजनेसमैन होने की तो बात छोड़िये, सरकारी या कार्पोरेट दफ्तर में क्लर्क बनने का खवाब भी नहीं देख पाते हैं। शकील साहब ने तंज करते हुए कहा कि कुछ सियासी, समाजी व मजहबी रहनुमाओं ने मुल्क के लाखों बच्चों से बड़ा आदमी बनने के सपने देखने को तो कहा, पर इन गरीब बच्चों से सपने देखने की सलाहियत ही छीन ली। परंपरागत निसाब से मदरसों में तालीम हासिल करने वाले बच्चों का आज क्या भविष्य है? अगर इन बच्चों की जरूरतें पूरी नहीं होंगी तो ये बड़े होकर क्या बनेंगे? वैष्वीकरण व औद्योगीकरण प्रक्रियाओं का जिक्र करते हुये उन्होंने कहा कि मकतब–मदारिस से फारिग बच्चों को रोजगार देने वाले, हाथों की कारीगरी पर आधारित उद्योग–धंधे ही चौपट हो रहे हैं। बहुत से मदरसों में केवल दीनी तालीम पर अब भी जोर है और वहां उर्दू सीखने को भी गैर–जरूरी मान लिया गया है। इन मदरसों से निकलने वाले तलबा केवल मदरसों में मुदर्रिस ही बन सकते हैं। अगर इन सबको नौकरी मिल जाये तो भी मुदर्रिस की बहुत कम तनख्वाह में इनकी जिन्दगी कैसे कटेगी। समय बदलने के साथ संयुक्त परिवार भी खत्म हो रहे हैं जिनकी वजह से जिन्दगी की मुष्किलें और बढ़ रही हैं। आज मजहबी तालीम के तकाजे भी बदल रहे हैं और दुनियावी तालीम के भी। आज मजहब को जानने और उसका प्रचार करने के तरीके भी बदल रहे हैं और पुराने तरीकों से काम चलने वाला नहीं है।

श्री शकील सिद्दीकी ने जोर देकर कहा कि मदरसों के निसाब में ऐसी तब्दीलियां लाना बहुत जरूरी हो गया है जिनसे बच्चे आज की चुनौतियों का मुकाबला कर सकें और दीनी मामलों की पूरी जानकारी के साथ दुनियावी हुनर हासिल कर जिन्दगी के दूसरे क्षेत्रों में भी सिर उठा कर आगे बढ़ सकें। मदरसों से निकले बच्चे ऐसे होने चाहिये कि वे जदीद तालीम के इदारों में आगे पढ़ाई के लिए आसानी से भर्ती हो सकें। मौजूदा निसाब में क्षेत्रीय भाषाओं व अंग्रेजी तथा सामाजिक विषयों की जानकारी होना उनमें आत्मविष्वास पैदा करेगी। मदरसों के पाठ्यक्रम में शारीरिक षिक्षा व खेल शामिल होने पर बच्चों का आत्मविष्वास और बढ़ेगा। श्री सिद्दीकी ने खुषी जाहिर की कि आज ज्यादा से ज्यादा लोगों और मदरसों में जदीद उलूम को लेकर बेदारी पैदा हो रही है। आज मदरसों के बच्चे सभी जगहों पर जा रहे हैं। कंप्यूटर सीखने के बाद नये रोजगार के रास्ते खुल रहे हैं। मदरसों के बच्चों द्वारा मुख्यधारा या मार्डन षिक्षा में जाने के रास्ते खुल रहे हैं और सरकार इसे मान्यता भी दे रही है। दूसरे प्रदेषों में मदरसों ने इंजीनियरिंग कालेज भी खोले हैं। अगर मदरसे व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाने लगें तो और बेहतर होगा। श्री सिद्दीकी ने कहा कि हमें मदरसा षिक्षा को बेहतर बनाने के साथ मुसलमानों में फैली गरीबी के खिलाफ भी लड़ना होगा।

श्री शकील सिद्दीकी द्वारा पर्चा पेष किये जाने के बाद प्रतिभागियों ने अनेक सवाल पूछे और अपनी कठिनाइयां व टिप्पणियां सामने रखीं। एक प्रतिभागी को जवाब देते हुए श्री सिद्दीकी ने कहा कि मदरसों का पाठ्यक्रम पूरी तरह दूसरे स्कूलों जैसा नहीं हो सकता और इसमें दीनी तालीम की अहमियत बनी रहेगी। पढ़ाई के बीच में ही स्कूल छोड़ने के अनेक कारणों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इसका एक कारण किताबों की विषयवस्तु भी है। गरीब बच्चों को किताबों में अपना घर और परिवार नहीं दिखता इसलिये वे पाठ्यसामग्री को अपने परिवेष से जोड़ नहीं पाते और उनको पढ़ाई में मजा नहीं आता है। उन्होंने सुझाव दिया कि मदरसा पाठ्यक्रम को बेहतर बनाने और इसमें यकसानियत लाने के लिए मदरसा पाठ्यक्रम समिति बनाई जानी चाहिये तथा लड़के और लड़कियों के साथ षिक्षा के मामले में भेदभाव नहीं किया जाना चाहिये। नालन्दा के मो. आसिम सिद्दीकी का मानना था कि प्राथमिक षिक्षा पढ़ाई नहीं है। बल्कि बच्चे को आगे की पढ़ाई के लिए तैयार करना है। बिसवां स्थित मदरसे के फारूक साहब ने कहा कि प्रषिक्षण के लिए तैयारी जरूरी है जिसमें षिक्षक की मानसिकता बदलना भी शामिल है। इसके बिना सालों–साल प्रषिक्षण देने का भी कोई नतीजा नहीं निकलेगा। षिक्षक को खुद को बदलना होगा तथा अपने को बच्चे का संरक्षक मानना होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस सेमिनार का मकसद तभी पूरा होगा जब षिक्षक खुद तैयार होंगे और खुद को बदलेंगे। प्रषिक्षण के बेहतर इस्तेमाल के बारे में एक प्रतिभागी के सवाल का जवाब देते हुए मो. आसिम ने कहा कि प्रषिक्षण के बाद कक्षा में लगातार प्रेक्टिस करने की जरूरत होती है। एक प्रतिभागी ने षिक्षकों की बुरी आर्थिक हालत पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जो षिक्षक अपने लिये उचित वेतन नहीं हासिल कर सकते हैं वे हमारी रहनुमाई भला कैसे करेंगे?

खुला सत्र

सभी विषिष्ट अतिथियों के पर्चे पेष होने और प्रतिभागियों द्वारा उन पर सवाल व टिप्पणियों के बाद खुले सत्र का आयोजन किया गया। इसमें प्रतिभागियों ने अपने सवाल रखे जिन पर विषिष्ट अतिथियों व नालन्दा प्रतिनिधियों के साथ ही दूसरे प्रतिभागियों ने भी अपनी राय दी। मदरसों से निकलने वाले बच्चों के बारे में मौलाना अब्दुल रज्जाक नदवी ने कहा कि बहुत से तलबा ऊंची–ऊंची जगहों पर पहुंचे हैं और एक ने तो आईएएस में टाप किया है। अगर मदरसों में तालीम का मेयार बेहतर हो तो और अच्छे नतीजे निकलेंगे। एक प्रतिभागी द्वारा उर्दू की हालत पर सवाल का जवाब देते हुए शकील सिद्दीकी ने कहा कि सरकारी कानूनों के हिसाब से बैंक वगैरा में उर्दू का इस्तेमाल किया जा सकता है। मौलाना नदवी का कहना था कि उर्दू को प्रोत्साहित करना जरूरी है इसके बगैर सरकार की योजनायें बेकार हो जाती हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेष सरकार ने अनेक विभागों में उर्दू अनुवादकों की व्यवस्था कर रखी है, पर जनता की तरफ से उर्दू में खतोकिताबत न होने पर उनको दूसरे कामों में लगा दिया जाता है। एक प्रतिभागी ने मजेदार तरीके से अपनी बात रखते हुए नालन्दा की ओर से मदरसा कार्यक्रम की खतोकिताबत उर्दू में करने तथा एक और प्रतिभागी ने नालन्दा के पैड पर उर्दू को जगह देने की बात की। सभी प्रतिभागियों ने इसका समर्थन किया और नालन्दा प्रतिनिधियों ने बहुत खुषी के साथ ये बदलाव करने का वादा किया। उर्दू षिक्षकों के प्रषिक्षण के बारे में अपना अनुभव बताते हुए मौलाना नदवी ने कहा कि लखनऊ में आल इंडिया उर्दू तालीम घर है जिन्होंने उर्दू षिक्षकों का प्रषिक्षण कार्यक्रम तैयार किया है। एक प्रतिभागी ने मदरसे की बेहतर तालीम में मदरसा प्रबंधक कमेटी की भूमिका जाननी चाही। नालन्दा के मो. आसिम सिद्दीकी ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि आमतौर से मदरसा कमेटी सदस्यों को तालीम के बारे में जानकारी नहीं होती है। माडल मदरसा बनाने के लिए कमेटी का बहुत महत्व है। इसके लिये नालन्दा मदरसा कमेटी के लोगों से लगातार बातचीत करता है। कई जगह मदरसा कमेटी के सदस्य षिक्षकों के प्रषिक्षण में कोई दिलचस्पी नहीं लेते न वे मदरसा बेहतरी के लिए हमसे खुल कर बातचीत ही करते हैं। पर कई जगह हालत इसके उलट भी है। हाल ही में कोलकाता में मदरसा षिक्षा पर काम करने वाली एक संस्था के सदस्यों ने नालंदा मदरसा कार्यक्रम के अनेक

मदरसों का दौरा किया। उन्होंने यहां के मदरसों की बहुत तारीफ की जिसमें मदरसा प्रबंधक कमेटी का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रतिभागियों का मानना था कि मदरसों में गुणवत्तापूर्ण षिक्षा देने के लिए मुदर्रिसों को बेहतर माहौल मिलना आवष्यक है।

एक प्रतिभागी ने सवाल किया कि क्या मदरसों के माडल कोर्स में मजहबी मामलों को ठीक से जोड़ते हुए कोई पाठ्यक्रम है? मो. जाकिर हुसेन नदवी ने इसका जवाब देते हुए बताया कि दीनी तालीमी कौंसिल ने ऐसा पाठ्यक्रम बनाया है। नालन्दा ने भी ऐसा कोर्स तैयार किया है। एक महिला प्रतिभागी ने षिक्षक प्रषिक्षण में मदरसों के प्रिंसिपलों को भी शामिल करने की जरूरत पर जोर दिया। नालन्दा के मो. आसिम ने कहा कि प्रिंसिपल इदारे का प्रमुख है। अगर वह षिक्षाषास्त्र से परिचित नहीं तो वह मदरसे की तालीम में गुणवत्ता नहीं ला सकता है। उन्होंने अपने एक कड़वे अनुभव का जिक्र करते हुये कहा कि क्या प्रिंसिपल का काम ताला बंद करना और चाभी रखना भर है। प्रिंसिपल को न केवल बच्चों की बेहतरीन षिक्षा के बारे में मालूम होना चाहिये बल्कि उसे इस पर महारत भी हासिल होनी चाहिये। एक दूसरी महिला प्रतिभागी ने कहा कि जहां प्रिंसिपल षिक्षा से परिचित नहीं हैं वहां वह केवल किताब से ही पढ़ाने पर जोर देते हैं। एक प्रतिभागी ने सवाल पूछा कि क्या मदरसों में केवल प्रषिक्षित षिक्षक रखने की कोई पाबंदी है? मो. आसिम ने जवाब दिया कि उत्तर प्रदेष में ऐसी कोई पाबंदी नहीं है पर पष्चिम बंगाल में है। मदरसों की मान्यता के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए शकील सिद्दीकी ने बताया कि मदरसा बोर्ड की नियमावली बन गई है। आगे चल कर मान्यता के लिए इसका पालन करना जरूरी हो जायेगा। मदरसे को मान्यता दिलाना प्रबंधकों की खास जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि मदरसे के पढ़े बच्चों को मदरसों में पढ़ाने का काम मिलना उनके रोजगार का प्रमुख साधन है, पर हमें बिना प्रषिक्षित षिक्षकों के भविष्य में जोखिम को देखते हुए प्रषिक्षण पर जोर देना चाहिये। प्रबंधक कमेटी, कानूनी तौर पर अपने रिष्तेदारों को अपने मदरसे में नौकरी नहीं दे सकती है। इस पर एक प्रतिभागी ने प्रबंधकों की मिलीभगत पर जमीनी हालत बताते हुये कहा कि वे अपने रिष्तेदारों को एक–दूसरे के मदरसों में नौकरियां दिलवा देते हैं जिससे काबिल तथा बच्चों की वाकई में बेहतरी चाहने वाले मुदर्रिसों का हक मारा जाता है। कई प्रतिभागियों का मानना था कि अपनी बुरी माली हालत के चलते ज्यादातर मदरसे प्रषिक्षित षिक्षकों का बोझ उठाने के लिए तैयार नहीं हैं। एक प्रतिभागी ने नालन्दा में प्रषिक्षण का सार्टीफिकेट देने की मांग की। इसका जवाब देते हुए मो. आसिम ने कहा कि नालन्दा कोई प्रमाण पत्र बांटने के लिये प्रषिक्षण कार्यक्रम नहीं चला रहा है बल्कि वह मदरसा षिक्षा से जुड़े लोगों के क्षमता विकास का प्रयास कर रही है।

खुली चर्चा के बाद नालन्दा में मदरसा षिक्षा कार्यक्रम के समन्वयक मो. आसिम सिद्दीकी ने सभी प्रतिभागियों, विषिष्ट अतिथियों तथा सेमिनार के इंतजाम में लगे जिले के लोगों का धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बात पर बहुत खुषी जताई कि प्रतिभागियों ने सेमिनार में बढ–चढ़ कर हिस्सा लिया तथा अपने सवालात और ख्यालात खुल कर सामने रखे। उन्होंने उम्मीद जाहिर की कि आगे चल कर पूरे समुदाय के सहयोग से नालन्दा प्रदेष के मदरसों में बेहतरीन व गुणवत्तापूर्ण षिक्षा को तरक्की देने के काम को और गति देगा तथा बेहतरीन षिक्षा हासिल कर मदरसों के तलबा न केवल अपनी और अपने समुदाय बल्कि देष की तरक्की में भी अहम भूमिका अदा करेंगे।

जिला स्तरीय सेमिनार में प्रतिभागियों की सूची

क्रम	प्रतिभागी की नाम	मदरसा का नाम व पता
1.	वसी अख्तर	न्यू आइडियल मान्टेसरी स्कूल, सीतापुर
2.	नईमुद्दीन अंसारी	मदरसा अलहुदा जू0हा0 स्कूल, बिसवां, सीतापुर
3.	फुरकान अली अंसारी	मदरसा अलहुदा जू0हा0 स्कूल, बिसवां, सीतापुर
4.	आफताब आलम	मदरसा बिसवां पब्लिक स्कूल, बिसवां, सीतापुर
5.	जफर अहमद अंसारी	मदरसा आलिया इस्लामिया मुरूवाटोला, बिसवां
6.	फिदा हुसैन	मदरसा जामिया कासिमुल उलूम
7.	मो0 जाकिर नदवी	
8.	मो0 एहतिषामुद्दीन	मदरसा तालिमुल कुरआन, बिसवां, सीतापुर
9.	जावेद अहमद खां	मदरसा नजमुल इस्लाम, खैराबाद, सीतापुर
10.	कारी नसीर अहमद	मदरसा दारूल उलूम, षेखसरायं, खैराबाद, सीतापुर
11.	रूखसाना बानो	मदरसा नियाजिया, षेखसरायं, खैराबाद, सीतापुर
12.	अन्जुम बानो	मदरसा नियाजिया, षेखसरायं, खैराबाद, सीतापुर
13.	रजिया सुल्ताना	मदरसा इष्आतुल उलूम, खैराबाद, सीतापुर
14.	इशिका कमली	मदरसा इष्आतुल उलूम, खैराबाद, सीतापुर
15.	वसीम मियां	मदरसा फजल गर्ल्स स्कूल, खैराबाद, सीतापुर
16.	मो0 अतहर कासमी	मदरसा अहयाउल उलूम, खैराबाद, सीतापुर
17.	साबिर अली	मदरसा फुरकानियां, बिसवां, सीतापुर
18.	मुफ्ती बाबर रहमान	
19.	षबनम बानो	मदरसा मोइनारहमानिया, बिसवां, सीतापुर
20.	मो0 अनवर	मदरसा अजमतुल
21.	मो0 असलम	मदरसा नासिरा तालीमुल कुरआन
22.	मो0 षारिक	मदरसा मोनिया रहमानिया
23.	मो0 नसीम	मदरसा जियाउल इस्लाम
24.	मो0 नसीर	मदरसा अषरफुल उलूम
25.	जबार अली	मदरसा अषरफुल उलूम
26.	रफत अली	मदरसा अषरफुल उलूम
27.	षफीक अहमद अंसारी	
28.	अमरा नूर	मदरसा फात्मा मेमोरियल स्कूल, खैराबाद, सीतापुर
29.	सायरा परवीन	मदरसा फात्मा मेमोरियल स्कूल, खैराबाद, सीतापुर
30.	मो0 जुबैर	मदरसा अरबिया इस्लामिया
31.	मो0 गुफरान	मदरसा अरबिया इस्लामिया आलापुर
32.	वसीम बेग	मदरसा इस्लामिया सिराजुल उलूम
33.	आसिफ अली	मदरसा इमरान मोहल्ला इस्लामाबाग
34.	महबूब अली	मदरसा अहसनुल उलूम
35.	मो0 अकरम	मदरसा बषीउलूम
36.	माजिद अली	मदरसा अरबिया इस्लामिया, आलमनगर
37.	इशरत फात्मा	मदरसा मुस्लिम फुरकानिया, बिसवां, सीतापुर
38.	खुर्षीद आलम	मदरसा इस्लामिया हयातुल उलूम, केदारपुर
39.	षाहेदा बेगम	मकतब निस्वा, मोहल्ला कोट
40.	दरखषा आरा	मकतब निस्वा, मोहल्ला कोट
41.	षब्बीर अहमद	मदरसा इस्लामिया, बिसवां, सीतापुर
42.	मो0 फारूख अली	मदरसा तालिमुल कुरान, लहरपुर, सीतापुर

कम	प्रतिभागी की नाम	मदरसा का नाम व पता
43.	मो0 षफीक खां	मदरसा सिराजुल उलूम
44.	सलामत	मदरसा जियाउल इस्लाम
45.	वकील अहमद कासमी	मदरसा मरकजील उलूम
46.	आफताब	
47.	षब्बीर अहमद	
48.	आजाद अली	मदरसा अरबिया मिस्बाहुल उलूम
49.	इबरत अली	मदरसा दारूल उलूम गौसिया अषरफिया
50.	मो0 षहर	मदरसा दारूल उलूम गौसिया अषरफिया
51.	राहत अली	मदरसा फजल गर्ल्स स्कूल
52.	मो0 इस्लाम	मदरसा नजमुल इस्लाम
53.	नजमुद्दीन खां	मदरसा नजमुल इस्लाम
54.	अब्दुल वकील	मदरसा फलाहुल उलूम, मीरा टोला, लहरपुर, सीतापुर
55.	मो0 इसरार	मदरसा इरफानिया अजीजुल उलूम
56.	मो0 असद	टपरा, बिसवां
57.	मो0 जान अंसारी	टपरा, बिसवां
58.	एहसान अली	मोहल्ला महाराजगंज, बिसवां, सीतापुर
59.	मो0 सालिम खां	मदरसा अरबिया तालिमुल कुरआन
60.	मो0 जयीम फारूकी	मदरसा अनवारूल कुरआन, लहरपुर, सीतापुर
61.	बषीर अहमद	मदरसा आलिया इस्लामिया, बिसवां, सीतापुर
62.	मो0 जुनैद गौरी	मदरसा रहमतुल उलूम, बिसवां, सीतापुर
63.	के0 बी0 सिंह	नालंदा, लखनऊ
64.	जियाउल इस्लाम	नालंदा, लखनऊ
65.	अशफाक अहमद	नालंदा, लखनऊ
66.	मो0 हिदायतुल्लाह आजमी	नालंदा, लखनऊ
67.	मो0 आसिम सिद्दीकी	नालंदा, लखनऊ
68.	षकील सिद्दीकी	नालंदा, लखनऊ
69.	तापस कुमार राय चौधरी	नालंदा, लखनऊ